गमों के बादल अब छट गये
सुखों का मौसम छाने लगा
प्रेम की वर्षा होने लगी
अँधियारा जीवन का हटने लगा
ज्ञान सूर्य अब प्रकट होने लगा
विकारों की गंध मिटने लगी
दिव्यता की महक बिखरने लगी
रूहानियत का नशा चढ़ने लगा
चंद्रमुखी सा मन खिलने लगा
रोशन जहां होने लगा
बुद्धि के पट खुलने लगे
नैनों में चमक छाने लगी
मुस्कराहट के फूल झरने लगे
प्रभु प्रेम रस में दिल मचलने लगा
आनंद के गीत गाने लगा
एक पल में जन्मों की प्यास बुझने लगी
मेरा बाबा मेरा बाबा कह मन नाचने लगा
भाग्य की कलम से नया जीवन
नयी सुबह की किरण को बिखेरने लगा

ॐ शांति